श्री हनुमान चालीसा

दोहा:

श्री गुरु चरण सरोज राज, निज मनु मुकुरु सुधारि |
बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दयाकु फल चारि ||

बुधी हीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार |
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहुं कलेश बिकार ||

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर, जय कपिस तिहुँ लोक उजागर |
रामदूत अतुलित बल धामा, अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ||

महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी |
कंचन वरन विराज सुबेसा, कानन कुण्डल कुंचित केसा ||

हाथ वज्र और ध्वजे विराजे, कांधे मूंज जनेहु साजे |
शंकर सुवन केसरी नंदन, तेज प्रताप महा जग वंदन ||

विद्यावान गुणी अति चतुर, राम काज करिबे को आतुर |
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, राम लखन सीता मन बसिया ||

सूक्ष्म रूप धरि सियाहिं दिखावा, बिकट रूप धरि लंक जरावा |
भीम रूप धरि असुर संहारे, रामचंद्र के काज संवारे ||

लाए संजीवन लखन जियाये, श्री रघुवीर हरषि उराये |
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिये भरत ही सम भाई ||

सहस बदन तुम्हारो जस गावे, असा कहि श्रीपति कंठ लगावे |
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा, नारद सारद सहित अहीसा ||

यम कुबेर दिगपाल जहां ते, कवि कोविद कहि सके कहां ते |
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा, राम मिलाये राजपद दीन्हा ||

तुम्हारो मंत्र विभीषण माना, लंकेश्वर भये सब जग जाना |
युग सहस्त्र जोजन पर भानू, लील्यो ताहि मधुर फल जानू ||

https://mkitaab.com/

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही, जलधि लंघि गये अचरज नाही |
दुर्गाम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ||

राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आग्या बिनु पैसारे |
सब सुख लहें तुम्हारी शरणा, तुम रक्षक काहु को दरणा ||

आपन तेज सम्हरो आपै, तीनों लोक हांक ते कांपै |
भूत पिशाच निकट नहिं आवै, महावीर जब नाम सुनावै ||

नसै रोग हरे सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत बीरा |
संकट ते हनुमान छुड़ावै, मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ||

सब पर राम तपस्वी राजा, तिनके काज सकल तुम साजा |
और मनोरथ जो कोई लावै, सोई अमित जीवन फल पावै ||

चारों युग प्रताप तुम्हारा, है परसिद्ध जगत उजियारा |
साधु संत के तुम रखवारे, असुर निकंदन राम दुलारे ||

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, असा बर दिन जानकी माता |
राम रसायन तुम्हारे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा ||

तुम्हारे भजन राम को पावै, जनम जनम के दुख बिसरावै |
अंत काल रघुबर पुर जाई, जहां जन्म हरि भक्त कहाई ||

और देवता चित न धरै, हनुमंत सें सर्व सुख करै |
संकट कटै मिटै सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ||

जय जय जय हनुमान गोसाई, कृपा करहुं गुरुदेव की नाई |
जो सत बार पाठ कर कोई, छूटहि बंदि महा सुख होई ||

जो यह पढ़े हनुमान चालीसा, होए सिद्धि सखी गौरीसा |
तुलसी दास सदा हरि चेरा, कीजै नाथ हृदये महां देरा ||

दोहा:
पवन तनय संकट हरन, मंगल मूर्ति रूप |
राम लक्ष्मण सीता सहित, हृदय बसहुं सुर भूप ||

https://mkitaab.com/